

**“मीठे बच्चे - श्रीमत पर कल्याणकारी बनना है, सबको सुख का रास्ता बताना है”**

**प्रश्न:-** किसी भी प्रकार की गफलत होने का मुख्य कारण क्या है?

**उत्तर:-** देह-अभिमान। देह-अभिमान के कारण ही बच्चों से बहुत भूलें होती हैं। वह सर्विस भी नहीं कर सकते हैं। उनसे ऐसा कर्म होता है जो सब नफ़रत करते हैं। बाबा कहते — बच्चे आत्म-अभिमानी बनो। कोई भी अकर्तव्य नहीं करो। क्षीरखण्ड हो सर्विस के अच्छे-अच्छे प्लैन बनाओ। मुरली सुनकर धारण करो, इसमें बेपरवाह नहीं बनो।

**गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...**

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की श्रीमता अभी हम सब सेन्टर्स के बच्चों से बात कर रहे हैं। तुम्हारे पास त्रिमूर्ति, गोला, झाड़, सीढ़ी, लक्ष्मी-नारायण और श्रीकृष्ण का चित्र — यह 6 चित्र हैं मुख्य। यह जैसे पूरी प्रदर्शनी है, इनमें सब सार आ जाता है। जैसे नाटक के पर्दे बनाये जाते हैं, एडवर्टाइज के लिए। वह कभी बरसात आदि में खराब नहीं होते हैं। ऐसे यह मुख्य चित्र बनाने चाहिए। बच्चों को श्रीमत मिलती है रूहानी सर्विस बढ़ाने लिए, भारतवासी मनुष्यों का कल्याण करने के लिए। गाते भी हैं — कल्याणकारी बेहद का बाप है तो जरूर कोई अकल्याणकारी भी होगा। जिस कारण बाप को आकर फिर कल्याण करना पड़ता है। रूहानी बच्चे जिनका कल्याण हो रहा है, वह इन बातों को समझ सकते हैं। जैसे हमारा कल्याण हुआ है तो हम फिर औरों का भी कल्याण करें। जैसे बाप को भी चिन्तन चलता है कि कैसे कल्याण करें। युक्तियाँ बता रहे हैं। 6X9 साइज के शीट पर यह चित्र बनाने चाहिए। देहली जैसे शहरों में अक्सर करके बहुत मनुष्य आते हैं। जहाँ गवर्नमेन्ट की एसेम्बली आदि होती है। सेक्रेट्रियेट तरफ बहुत लोग आते हैं, वहाँ यह चित्र रखने चाहिए। बहूतों का कल्याण करने अर्थ बाप मत देते हैं। ऐसे टीन पर बहुत चित्र बन सकते हैं। देही-अभिमानी बन बाप की सर्विस में लगना है। बाप राय देते हैं — यह चित्र हिन्दी और अंग्रेजी में बनाने चाहिए। यह 6 चित्र मुख्य जगह पर लग जायें। अगर ऐसे मुख्य स्थानों पर लग जायें तो तुम्हारे पास सैकड़ों समझने के लिए आयेंगे। परन्तु बच्चों में देह-अभिमान होने के कारण बहुत भूलें होती हैं। ऐसे कोई मत समझे कि मैं पक्का देही-अभिमानी हूँ। गलतियाँ तो बहुत होती हैं, सच नहीं बतलाते हैं। समझाया जाता है, ऐसा कोई कर्तव्य नहीं करो जो कोई खराब नफ़रत लाये कि इनमें देह-अभिमान है। तुम सदैव युद्ध के मैदान में हो। और जगह तो 10-20 वर्ष तक युद्ध चलती है। तुम्हारी माया से अन्त तक युद्ध चलनी है। परन्तु है गुप्त, जिसको कोई जान नहीं सकते। गीता में जो महाभारत लड़ाई है, वह जिस्मानी दिखाई है। परन्तु है यह रूहानी। रूहानी युद्ध है पाण्डवों की। वह जिस्मानी युद्ध है जो परमपिता परमात्मा से विप्रीत बुद्धि हैं। तुम ब्राह्मण कुल भूषणों की है प्रीत बुद्धि। तुमने और संग तोड़ एक बाप के संग जोड़ी है। बहुत बार देह-अभिमान आने कारण भूल जाते हैं फिर अपना ही पद भ्रष्ट कर लेते हैं। फिर अन्त में बहुत पछताना

पड़ेगा। कुछ कर नहीं सकेंगे। यह कल्प-कल्प की बाजी है। इस समय कोई अकर्तव्य कार्य करते हैं तो कल्प-कल्पान्तर के लिए पद भ्रष्ट हो जाता है। बड़ा घाटा पड़ जाता है।

बाप कहते हैं — आगे तुम 100 प्रतिशत घाटे में थे। अब बाप 100 प्रतिशत फायदे में ले जाते हैं। तो श्रीमत पर चलना है। हर एक बच्चे को कल्याणकारी बनना है। सबको सुख का रास्ता बताना है। सुख है ही स्वर्ग में, नर्क में है दुःख। क्यों? यह है विशाश दुनिया। वह वाइसलेस थी, अब विशाश दुनिया बनी है। फिर बाप वाइसलेस बनाते हैं। इन बातों को दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। तो मुख्य यह चित्र परमानेंट स्थानों पर लगाने चाहिए। पहला नम्बर देहली मुख्य, सेकण्ड बॉम्बे और कलकत्ता, कोई को ऑर्डर देने से शीट पर बना सकते हैं। आगरा में भी घूमने के लिए बहुत जाते हैं। बच्चे सर्विस तो बहुत अच्छी कर रहे हैं और भी कुछ कर्तव्य करके दिखायें। यह चित्र बनाने में कोई तकलीफ नहीं है। सिर्फ एक्सपीरियन्स (अनुभव) चाहिए। अच्छे बड़े चित्र हों जो कोई दूर से भी पढ़ सके। गोला भी बड़ा बन सकता है। सेफ्टी से रखना पड़े। जो कोई खराब न करे। यज्ञ में असुरों के विघ्न पड़ते हैं क्योंकि यह हैं नई बातें। सब अपनी-अपनी दुकान निकाल बैठे हैं। आखरीन में सब समझ जायेंगे कि हम उतरते आये हैं जरूर कुछ खामी है। बाप है ही कल्याणकारी। वही बता सकते हैं कि भारत का कल्याण कैसे और क्यों हुआ है। भारत को तमोप्रधान कौन बनाते हैं फिर सतोप्रधान कौन बनाते हैं, यह चक्र कैसे फिरता है, कोई नहीं जानते हैं। संगमयुग को भी नहीं जानते हैं। समझते हैं भगवान युगे-युगे आता है। कभी कहते हैं भगवान तो नाम रूप से न्यारा है। भारत प्राचीन स्वर्ग था। यह भी कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले देवताओं का राज्य था फिर कल्प की आयु लम्बी दे दी है तो बच्चों को देही-अभिमानि बनने की बड़ी मेहनत करनी है। आधाकल्प सतयुग और त्रेता में तुम आत्म-अभिमानि थे परन्तु परमात्म-अभिमानि नहीं थे। यहाँ तो फिर तुम देह-अभिमानि बन पड़े हो। फिर देही-अभिमानि बनना पड़े। यात्रा अक्षर भी है, परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। मनमनाभव का अर्थ है रूहानी यात्रा पर रहो। हे आत्मायें मुझ बाप को याद करो। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। वह गीता का भगवान कैसे हो सकता है। उन पर कोई कलंक लगा न सके। यह भी बाप ने समझाया है सीढ़ी जब उतरे हैं तो आधाकल्प काम निता पर बैठ काले हो जाते हैं। अब है ही आइरन एज। उनकी सम्प्रदाय काली ही होगी। परन्तु सबका सांवरण रूप कैसे बनायें। चित्र आदि जो भी बनाये हैं सब बेसमझी के। उसको ही श्याम फिर सुन्दर कहना... यह कैसे हो सकता है। उनको कहा ही जाता है अन्धश्रद्धा से गुड़ियों की पूजा करने वाले। गुड़ियों का नाम रूप ऑक्वूपेशन आदि हो नहीं सकता। तुम भी पहले गुड़ियों की पूजा करते थे ना। अर्थ कुछ भी नहीं समझते थे। तो बाबा ने समझाया है — प्रदर्शनी के चित्र मुख्य बन जायें। कमेटी बने जो प्रदर्शनी पिछाड़ी प्रदर्शनी करती रहे। बन्धन मुक्त तो बहुत हैं। कन्यायें बन्धनमुक्त हैं। वानप्रस्थी भी बन्धनमुक्त हैं। तो बच्चों को डायरेक्शन अमल में लाना चाहिए। यह हैं गुप्त पाण्डवा। कोई कू भी पहचान में नहीं आ सकते। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त। वहाँ मनुष्य, मनुष्य को ज्ञान देते हैं। यहाँ परमात्मा

बाप ज्ञान देते हैं आत्माओं को। परन्तु यह नहीं समझते कि आत्मा ज्ञान लेती है क्योंकि वह आत्मा को निर्लेप कह देते हैं। वास्तव में आत्मा ही सब कुछ करती है। पुनर्जन्म आत्मा लेती है, कर्मों के अनुसार। बाप यह सब प्वाइंट्स अच्छी रीति बुद्धि में डालते हैं। सब सेन्टर्स में नम्बरवार देही-अभिमानी हैं। जो अच्छी रीति समझते और फिर समझाते हैं। देह-अभिमानी न कुछ समझते न समझा सकते हैं। मैं कुछ समझती नहीं हूँ, यह भी देह-अभिमान है। अरे तुम तो आत्मा हो। बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। दिमाग ही खुल जाना चाहिए। तकदीर में नहीं है तो खुलता ही नहीं। तो बाप तदबीर कराते हैं परन्तु तकदीर में नहीं है तो पुरूषार्थ भी नहीं करते हैं। है बहुत सहज, अल्फ और बे समझना है। बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। तुम भारतवासी सब गॉड गॉडेज थे। प्रजा भी ऐसी थी। इस समय पतित बन पड़े हैं। कितना समझाया जाता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप कहते हैं बच्चे हमने तुमको गॉड गॉडेज बनाया। तुम अब क्या बन गये हो। यह है कुम्भी पाक नर्क। विषय वैतरणी नदी में मनुष्य जानवर पंछी आदि सब एक समान दिखाते हैं। यहाँ तो मनुष्य और ही खराब हो पड़े हैं। मनुष्यों में क्रोध भी कितना है। लाखों को मार देते हैं। भारत जो वेश्यालय बना है फिर इनको शिवालय शिवबाबा ही बनाते हैं। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। डायरेक्शन देते हैं ऐसे-ऐसे करो। चित्र बनाओ। फिर जो बड़े-बड़े मनुष्य हैं उन्हीं को समझाओ। यह प्राचीन योग, प्राचीन नॉलेज सबको सुननी चाहिए। हाल लेकर प्रदर्शनी लगानी है। उन्हीं को तो पैसे आदि कुछ नहीं लेने चाहिए। फिर भी जो ठीक समझो तो किराया लो। चित्र तो आप देखो, चित्र देखेंगे तो फिर झट पैसे वापिस कर देंगे। सिर्फ युक्ति से समझाना चाहिए। अथॉरिटी तो हाथ में रहती है ना। चाहे तो सब कुछ कर सकते हैं। वह थोड़ेही समझते हैं, विनाश काले विपरीत बुद्धि तो विनाश को प्राप्त हो गये। पाण्डवों ने तो भविष्य में पद पाया। सो भी राज्य पीछे भविष्य में होगा। अभी थोड़ेही होगा। यह मकान आदि सब टूट जायेंगे। अब बाप ने समझाया है प्रदर्शनी भी करनी चाहिए। खूब अच्छी तरह से कार्ड पर निमन्त्रण देना है। तुम पहले बड़ों को समझाओ तो मदद भी करेंगे। बाकी सोये नहीं रहना है। कई बच्चे देह-अभिमान में सोये रहते हैं। कमेटी बनाए क्षीरखण्ड हो प्लैन बनाना चाहिए। बाकी मुरली नहीं पढ़ेंगे तो धारणा कैसे होगी। ऐसे बहुत लागर्ज (बेपरवाह) हैं। अच्छा —

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- १- देही-अभिमानी बनकर सर्विस की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ निकालनी हैं। आपस में क्षीरखण्ड होकर सर्विस करनी है। जैसे बाप कल्याणकारी है ऐसे कल्याणकारी बनना है।
- २- ग्रीत बुद्धि बन और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। कोई ऐसा अकर्तव्य नहीं करना है जो कल्य-कल्यान्तर के लिए नुकसान हो जाए।

**वरदान:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा अपने रजिस्टर को साफ करने वाले लोकप्रिय, प्रभू प्रिय भव**

जैसे साइन्स ने ऐसी इन्वेन्शन की है जो लिखा हुआ सब मिट जाए, मालूम न पड़े। ऐसे आप साइलेन्स की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज़ साफ करो तो प्रभू प्रिय वा दैवी लोक प्रिय बन जायेंगे। सच्चाई सफाई को सभी पसन्द करते हैं। इसलिए एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की दूसरे दिन लीक भी न रहे, बीती को बीती कर फुलस्टाप लगा दो तो रजिस्टर साफ रहेगा और साहेब राज़ी हो जायेगा।

**स्तोत्र:-**

व्यर्थ संकल्प करना व दूसरों के व्यर्थ संकल्प चलाने के निमित्त बनना-यह भी अपवित्रता है।

## सूचना

1. यज्ञ में बहुत समय से समर्पित अथक सेवाधारी कृष्णा बहन जो पहले केशवपुरम दिल्ली में सेवारत थी, अभी त्रिनगर में सेवा पर उपस्थित थी। ड्रामा की भावी जो 5 जनवरी 2006 की रात अचानक आपने अपना पुराना शरीर त्याग बापदादा की गोद में समा गयी। उनको कुछ समय से हार्ट की तकलीफ थी।
2. बापदादा की लाडली शान्ता बहन, मधुबन में बाबा के 31 दिसम्बर के टर्न में अथक सेवा का पार्ट बजाकर तामिलनाडु में अपने सेवास्थान पर जा रही थी। 6 जनवरी 2006 को अहमदाबाद में एक भाई और बहन के साथ कुछ खरीददारी करने के लिए बाजार में गयी थी। वहाँ एक दुकान की सेकेण्ड फ्लोर से नीचे गिर जाने से ब्रेन हैमरेज हो गया। जब तक हॉस्पिटल पहुंचे रास्ते में ही शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। अहमदाबाद से उनका पार्थिव शरीर चेन्नई ले गये, जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया।
3. मधुबन/शान्तिवन के बहुत पुराने पक्के योगी, आनेस्ट बाबा के लाडले सत्यनारायण भाई जो 1961 से समर्पित अथक सेवाधारी रहे। आपने 15 वर्षों तक जगदीश भाई के साथ दिल्ली कमलानगर में प्रेस की सेवायें की। अभी ज्ञानमृत प्रेस शान्तिवन में सेवारत थे। 8 जनवरी 2006 रात में अचानक हार्ट फेल हो जाने के कारण पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। 10 ता. को उनका अन्तिम संस्कार मधुबन के चारों धामों की परिक्रमा कराते किया गया।
4. सिहोर (भावनगर, गुजरात) सेवाकेन्द्र पर सेवा में 12 साल से समर्पित बापदादा की बहुत भोली लवली सेवाधारी अल्का बहन का अचानक स्कूटर से एक्सीडेंट हो गया, कुछ समय अहमदाबाद में हॉस्पिटल में थी, 10 ता. को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली।